श्री नन्दीश्वरद्वीप लघु विधान

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108

श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य

108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

-: रचयित्री :-

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि०)

कृति : श्री नन्दीश्वद्वीप लघु विधान
कृतिकार : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी
तृतीया संस्करण : 2100 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष : 2025
न्यौछावर राशि : 20.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

प्राप्ति स्थान :

1. राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)
दूरभाष : 9650946696

2. उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)
दूरभाष : 7982630514

3. श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
दूरभाष : 09311168299, 011-23253638

4. श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश)
दूरभाष : 9425726867

5. श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम
शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
दूरभाष : 8824620107

Website - www.munisuvratswastidham.com
Instagram - munisuvrat_swastidham
Facebook - munisuvratswastidham
Youtube - swastidhamjahazpur

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

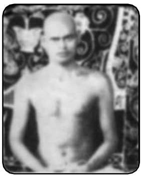

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

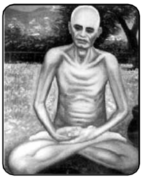

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

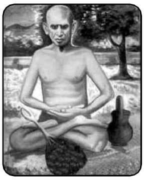

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

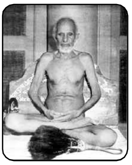

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम सिंहरथ प्रवर्त्तक पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

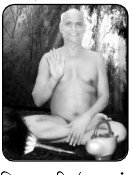

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

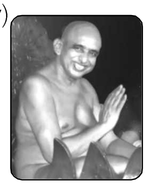

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)

जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)

जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन

पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन

माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन

ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)

क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में

क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज

क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज

मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज

उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)

आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)

समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)

जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी

जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)

पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी)
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)

माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)

5 वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य आचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागर जी महाराज

2 वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)

आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत

दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)

वर्तमान पट्टगुरु व
गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज

तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत

(अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद्)

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है।

आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंत:करण से निकले हुए उद्‌गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्‌गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में नि:स्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

अष्टान्हिका - महापर्व

भरत क्षेत्र के दक्षिण दिशा पोदनपुर में विद्याधर राजा और रानी सोम सुखपूर्वक निवास करते थे। संसार में धर्म सुख एवं शांति देता है जब मन और हमारा आचरण धर्म से जुड़ा होता है। राजा-रानी धर्म के हर कार्य में तत्पर रहते थे। रानी सम्यक्त्व को धारण किये हुए थी। एक दिन दोनों ने चारण ऋद्धिधारी मुनिवर को आहार दिया। उसी समय आकाश में जय जयकार की शुभ ध्वनि हुई। पश्चात् कारण पूछा तब मुनिराज ने बताया कि इस समय अष्टान्हिका पर्व चल रहे हैं। इन पर्वों में स्वर्ग के देवता नन्दीश्वर द्वीप की वंदना, पूजा, अर्चना हेतु जाते हैं। अति उत्साह के साथ वे उन अकृत्रिम चैत्यालयों की वंदना करते हैं, वहाँ की प्रतिमाओं के दर्शन से सम्यक् दर्शन की प्राप्ति होती है। मुनिराज के मुख से नंदीश्वर द्वीप का महत्व सुनकर रानी बड़ी प्रसन्न हुई। उसने नगर के चैत्यालय में जाकर नंदीश्वर द्वीप की पूजा भक्ति की और पाठ रचाया।

राजा रानी से कहने लगा रानी! तू यहाँ पूजा क्यों करती है चलो हम नंदीश्वर द्वीप जाकर ही पूजन करेंगे। हम विद्याधर हैं आकाश गमन करके शीघ्र ही वहाँ पहुँच जावेंगे। तब रानी ने कहा, राजन् हम मनुष्य हैं, हम सिर्फ ढाई द्वीप के अन्दर ही विचरण कर सकते हैं। इसके बाहर सिर्फ देवता ही जा सकते हैं। मानुषोत्तर पर्वत का उल्लंघन करना हम मनुष्यों की शक्ति के बाहर है। रानी जिस धर्म की दृढ़ श्रद्धानी थी उसे आचार्य वचनानुसार ज्ञान प्राप्त था। लेकिन राजा के मन में भी नंदीश्वर द्वीप के दर्शन की तीव्र अभिलाषा थी। वह अपनी इस इच्छा को नहीं रोक पाया। उसने अपना विमान उठाया और नंदीश्वर द्वीप के दर्शन के लिए वेग से प्रस्थान कर गया। पुष्कर वर द्वीप के मध्य में जाकर राजा का विमान मानुषोत्तर पर्वत से टकराया और चूर-चूर हो गया। राजा मृत्यु को प्राप्त हो गया। हृदय में प्रभु दर्शन की अभिलाषा थी। मन में भक्ति के भाव उमड़ रहे थे। शुभ परिणाम स्वरूप मृत्यु को प्राप्त हुआ इसीलिए वह स्वर्ग में देव हो गया। देव बनकर वह सर्वप्रथम नंदीश्वर द्वीप गया। दिल की चाह ने उसे नंदीश्वर द्वीप पहुँचा दिया। किसी कवि ने कहा भी है कि 'जहाँ चाह होती है वहाँ राह होती है।' भक्ति भाव से रत्नमयी अष्ट द्रव्यों से भगवान की पूजन की। आठ दिवस सुखमय बिताकर अपने राज्य में

लौटकर आया। राज्य में पूर्वावस्था राजा का रूप बनाया और रानी के महल में पहुँच गया।

रानी से राजा ने कहा रानी मैं नंदीश्वर द्वीप के दर्शन कर आया। वहाँ के मन्दिर वहाँ की प्रतिमाएं अति सुन्दर हैं। मानों साक्षात तीर्थंकर विराजमान हों। दर्शन कर ऐसा प्रतीत होता है जैसे समवशरण में विराजमान वीर प्रभु के दर्शन कर रहे हों। रानी ने कहा राजन् यदि आप मेरे पति हैं तो आप नंदीश्वर द्वीप नहीं गये। यदि नंदीश्वर द्वीप गये हैं तो आप मेरे पति नहीं हैं। रानी के दृढ़ वचनों के सामने देव ज्यादा देर टिक नहीं सका, तुरन्त अपना असली रूप प्रकट कर दिया। रास्ते में घटी सारी घटना का बयान किया। जब राजा नंदीश्वर द्वीप दर्शन को गया था, तब रानी अष्टान्हिका पर्व पर उपवास व्रत आदि के माध्यम से तपस्या में रत थी। षट् आवश्यक का पालन बड़ी निष्ठापूर्वक कर रही थी।

क्या करें : - अष्टान्हिका पर्व पर त्यागमय प्रवृति का अनुसरण करें। जीवन को संयममय बनावें। भोजन, वस्त्र आदि परिमाण कर लेवें।

1. ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर, राग रंग से दूर रहें।
2. प्रतिदिन पूजन अवश्य करें। पूजन देव शास्त्र गुरु, नंदीश्वर द्वीप और वेदी में विराजमान तीर्थंकर की करनी चाहिये।
3. पान, बीड़ी, सिगरेट, शराब, तम्बाकू, गुटखा आदि व्यसन की वस्तुओं का सेवन न करें।
4. बाजार का भोजन न करें।

नंदीश्वर द्वीप कहाँ है?

मध्यलोक में नंदीश्वर द्वीप आठवां है। सुन्दर वनों और स्वच्छ जल सहित बावड़ियों से इस द्वीप की शोभा चौगुनी हो जाती है। इस द्वीप की महत्ता बढ़ाने वाले यहाँ के अकृत्रिम जिनालय हैं। विराजमान बिम्ब साक्षात् तीर्थंकर का दर्शन कराते हैं। शास्त्रों में जब इसका वर्णन् पढ़ते हैं तो दर्शनों की अभिलाषा तीव्र हो जाती है। जिनवाणी में नंदीश्वर द्वीप की पूजन की जयमाला में वर्णन अति सुन्दर किया गया है पर लोगों की समझ में नहीं आता है। सुन्दर लय में पढ़कर पूजा करके कर्तव्य की इतिश्री कर देते हैं पर पूर्ण आनन्द नहीं उठा पाते। इसीलिये नंदीश्वर द्वीप की जयमाला के माध्यम से नंदीश्वर द्वीप का वर्णन किया जा रहा है।

अष्टान्हिका पर्व पर अवश्य करें

पंचमकाल में हीन शक्ति, ज्यादा उपवास होते नहीं, स्वाध्याय में मन नहीं लगता, ऐसे समय में भक्ति ही एक साधन है जो हमारी नैया को पार लगा सकती है। यदि हम भक्ति पूजा नहीं करते तो जीवन पाकर हमने जीवन का लाभ नहीं लिया।

अष्टान्हिका पर्व पर स्वर्ग के देवगण नंदीश्वर द्वीप जाकर भगवान की पूजा रत्नमयी द्रव्यों से करते हैं। हम मनुष्य ढाई द्वीप से बाहर नहीं जा सकते इसी लिये अष्टान्हिका पर्व पर रोज इस विधान को करके भाव पूजा सही से करें। यदि इसके साथ व्रत उपवास-जाप आदि करें तो इसका पुण्यार्जन चौगुना हो जायेगा। इसी उद्देश्य को लेकर इस विधान को तैयार किया है। आप सब इसके माध्यम से भक्ति करके मोक्षमार्ग सरल करें।

आ. 105 स्वस्ति भूषण

सोच लो कि इस धरा का साथ में क्या जायेगा।
इस धरा का इस धरा पर ही धरा रह जायेगा।।
जिन्दगी भर का कमाया साथ में ना जायेगा।
यह सुअवसर खो दिया तो बाद में पछतायेगा।।

नन्दीश्वर व्रत जाप्य मंत्र

1. ॐ ह्रीं नन्दीश्वरसंज्ञाय नमः
2. ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः
3. ॐ ह्रीं त्रिलोकसारसंज्ञाय नमः
4. ॐ ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः
5. ॐ ह्रीं पंच महालक्षणसंज्ञाय नमः
6. ॐ ह्रीं स्वर्ग सोपानसंज्ञाय नमः
7. ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राय नमः
8. ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः

श्री नंदीश्वरद्वीप विधान माण्डला

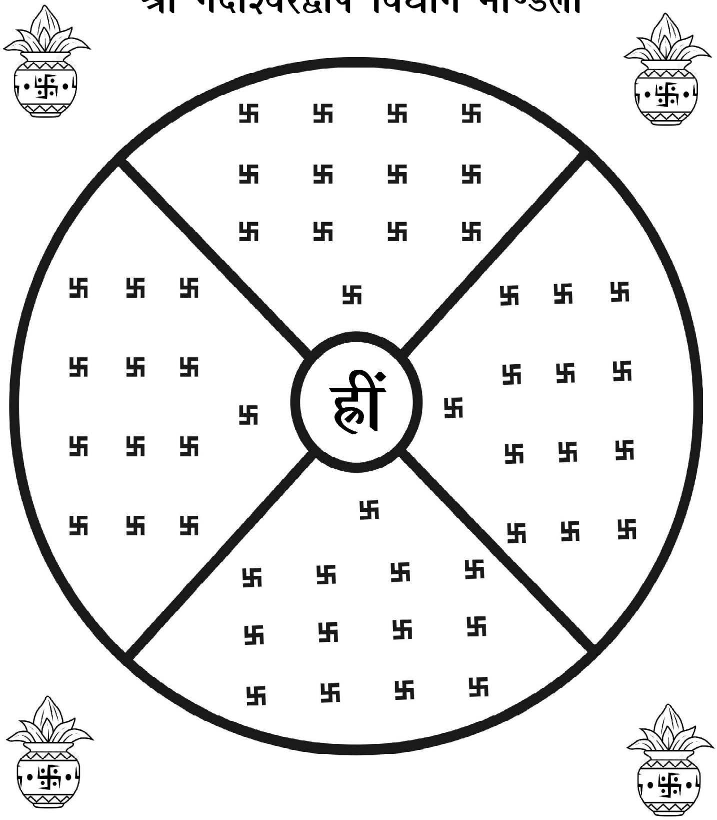

महा समुच्चय पूजन

स्थापना

चौपाई

अरिहंत सिद्धाचार्य नमन कर, पाठक साधु को शीश झुकाकर।
णमोकार को मन से जपता, सारे पाप शमन मैं करता।।
सामायिक नित आत्म को ध्याकर, पूजा का शुभ भाव बनाकर।
अष्ट द्रव्य मैं लेकर आया, तेरी पूजा कर हर्षाया।।
सहस्रनाम को पढ़ हर्षाऊँ, नित आगम का ध्यान मैं ध्याऊँ।
ऐसी शक्ति हृदय में देना, अपने चरणों में रख लेना।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरू संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी, पावापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट् संन्निधिकरणं।

चाल छंद - 'तुम सम्मेद शिखर को जइयो'

शुभ भावों का जल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्शन जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन वंदन को लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ भवाताप का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अक्षत धोकर लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ अक्षयपुर में वासा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्शन जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों का हार सजाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ काम बाण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन का थाल मैं लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ क्षुधा व्याधि का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीपक लेकर आऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ मोह अंध का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वन्हि में धूप जराऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ अष्ट कर्म का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं सरस सभी फल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ मुक्तिपुरी से वासा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यों की माला लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
हो अनर्घ्य पद का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

प्रभु ध्यान लगाके, भावना भाके, मंगलमय जीवन करता।
हो चरण में वंदन, जीवन चंदन, भक्ति से मैं भव तरता।।

शंभू छंद (तर्जः भला किसी का...)

अरिहंत सिद्ध आचार्य गुरू का, हम नित वंदन करते हैं।
उपाध्याय और सर्व साधु का, ध्यान हृदय में धरते हैं।।
देव हो सच्चा शास्त्र हो सच्चा, सच्चे गुरु को ध्याऊँगा।
भरत ऐरावत ढाई द्वीप, तीसों चौबीसी ध्याऊँगा।।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, दर्शन की आशा करता।
होगा जब प्रत्यक्ष दर्श तो, हिय भी हर्ष तभी धरता।।
तीर्थंकर की वाणी ही, जिनवाणी जन कल्याण करे।
भव से पार करादे उसको, जो इस पर श्रद्धान करे।।
कृत्रिमा-कृत्रिम तीन लोक के, जिन गृह को वंदन करता।
सिद्धालय के सिद्धों को ध्या, उन सम बनूँ आशा करता।।
पाँच मेरु के जिन बिम्बों को, करूँ मैं शत-शत बार नमन्।
नंदीश्वर के बावन जिन ध्या, पाप कर्म का करूँ शमन।।
सोलह कारण भाव हैं सुन्दर, पद तीर्थंकर का देते।
दशलक्षण को धारण करके, मुक्ति सुन्दरी वर लेते।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित का, आराधन हम करते हैं।
हो जाये यदि एक बार तो, चतुर्गति को हरते हैं।।
ऋषभ आदि श्री वीर जिनंदा, भावों से पूजन करता।
सच्ची श्रद्धा सच्ची भक्ति, से ही मानव सुख वरता।।
गौतम गणधर सप्त ऋषि, आदि का ध्यान लगाऊँगा।
विघ्नों का होगा विनाश, औ ऋद्धि सिद्धि को पाऊँगा।।
राम हनु भरतेश बाहुबलि, के पुरुषारथ याद करूँ।
पंच बालयति तीर्थंकर ध्या, मुक्तिपुरी को शीघ्र वरूँ।।

समवशरण में मानस्तम्भ है, सहस्र कूट जिन को वंदू।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पा, कल्याणक से अभिनंदू।।
जिस भूमि को तीर्थकर ने, लेकर जन्म पवित्र किया।
तीर्थ अयोध्या श्रावस्ती, आदि को हमने नमन किया।।
रानीला जी में प्रगट हुये, श्री आदिनाथ वंदन करता।
चाँदखेड़ी के ऋषभनाथ का, ध्यान हृदय में नित धरता।।
देहरे के चंदा महावीर जी, सबकी विपदायें हरते।
श्री सम्मेदशिखर चंपापुर, औ सोनागिरि हृदय धरते।।
श्री नेमिनाथ जी मोक्ष गये, गिरिनार गिरि को वंदन है।
श्री आदिनाथ कैलाश गिरि की, मिट्टी बन गई चंदन है।।
जितने भी मुनिवर सिद्ध हुए, निर्वाण भूमि को नमन करूँ।
कर्म नाश कर जग का दुख हर, मैं भी मुक्ति स्वयं वरूँ।।
शुभ भावों से की गई पूजा, शुभ फल को ही देती है।
भक्ति अर्चन पूजन वंदन, संकट सब हर लेती है।।
मोह क्रोध तज पाप छोड़कर, निज का ही रूप निहारूँगा।
'स्वस्ति' जिन पूजन करके ही, प्रभु सम रूप सम्हारूँगा।।

दोहा

पूजन से प्रभु आपकी, रोम - रोम हर्षाये।
जिन पूजन का फल मिले, स्वर्ग मोक्ष को पाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरू संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी, पावापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो, जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिन शासन जिन देव औ, जिन गुरु शीश नवाय।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुन्दरी पाय।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

विधान प्रारम्भ

श्री नन्दीश्वर द्वीप स्थित बावन जिनालय

समुच्चय पूजा

स्थापना-शम्भू छंद

नंदीश्वर में ईश्वर रहते, बावन जिन मंदिर राज रहे।
ये पर्व अठाई जब आये, वैभव सुन्दरता साज रहे।।
इन्द्र देव पूजा करने सब, हो प्रसन्न मन जाते हैं।
पूजा भक्ति भाव से उनको, चरणों शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिन-प्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक-नंदीश्वर चाल

क्षीरोदधि का जल लाय, चरण चढ़ाने को।
यह मलिन मान धुल जाये, कर्म घटाने को।।
नंदीश्वर के भगवान, भक्ति को आये।
सुख जीवन का वरदान पाने को आये।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन सा ज्ञान, शीतल कर देता।
आतम शीतलता हेतु, पूजा मैं करता।।
नंदीश्वर के भगवान.......

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ना जन्म दुबारा होय, अक्षत ले आये।
अक्षय पद पाने हेतु, पूजा मन भाये।।
नंदीश्वर के भगवान.......

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम है खुशबू दार, कर्म ना लेने दें।
पुष्पों से पूजूँ नाथ, काम न होने दें।।
नंदीश्वर के भगवान.......

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवास व्रतों को छोड़, निश दिन खाते हैं।
यह भूख लगे ना नाथ, भाव बनाते हैं।।
नंदीश्वर के भगवान, भक्ति को आये।
सुख जीवन का वरदान, पाने को आये।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ले ज्ञान का हाथ, पथ दर्शाता है।
दीपक से पूजूँ नाथ, मुक्ति दिलाता है।।
नंदीश्वर के भगवान.......

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्चा करते हैं नाथ, चर्या ना करते।
कर्मों की धूप चढ़ायें, दुःख को हम हरते।।
नंदीश्वर के भगवान.......

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर प्रभु तेरा नाम, मन को साफ करें।
फल सम्यक् दर्शन हेतु, फल को भेंट करें।।
नंदीश्वर के भगवान.......

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्छल पवित्र अनुराग, से पूजा करते।
सौभाग्य अर्घ्य ले साथ, कर्मों को हरते।।
नंदीश्वर के भगवान.......

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

नंदीश्वर के दर्श का, मिले हमें सौभाग्य।
जीवन सार्थक यह बने, मोह नींद से जाग।।

शेर चाल–दे दी हमें आजादी...

नंदीश्वर के मंदिरों को, नमस्कार है।
प्रतिमायें उनमें राजती ये, नमस्कार है।।
चारों दिशा में तेरा-तेरा, चैत्य हैं यहां।
मैं वंदना भी करता रहूँ, भाव हैं महा।।1।।
है आठवां ये द्वीप, आठ कर्म नाशता।
जो भी करेगा पूजा, भाव ज्ञान भासता।।
चहुं ओर है समुद्र, पानी-पानी है भरा।
हम भाव से पूजा करें तो धर्म हो रहा।।2।।
है एक सौ त्रेसठ करोड, योजनों कहा।
चौरासी लाख राजता इक दिशा में महा।।
चारों दिशा में चार, चार अंजन पहाड़ हैं।
सुंदर वनों के साथ में शोभा अपार है।।3।।
हैं ढोलकी के जैसे ही, ये गोल-गोल हैं।
स्वमेव बने ना बनायें, ये भूगोल हैं।।
चारों दिशा में चार, बावड़ी बनी यहाँ।
जल से भरी हैं कांच जैसे चमके हैं अहा।।4।।
चारों वनों में जाके देव, क्रीड़ा को करें।
चारों ही बावड़ी में जल, कल्लोल भी करें।।
चारों दिशा ही चार, दधिमुख को धारती।
है साथ में दो रतिकरों के संग भारती।।5।।
बत्तीस शैल एक सहस, योजनों कहे।
संपूर्ण मंदिरों की संख्या, बावनों रहे।।
प्रत्येक गिरि के शीश पे, जिन मंदिर बना है।
अठ एक सौ प्रतिमा के संग, रूप घना है।।6।।

जा देव देवियां प्रभु के, रूप निहारें।
मन मोहिनी प्रतिमायें बनी, आत्म सहारे।।
हैं पांच सौ धनुष की, ऊँची-ऊँची हैं कही।
भक्ति करेंगे देव ज्ञान, धार भी बही।।7।।
साक्षात् तीर्थंकर हो मानो, रूप ऐसा है।
बस बोलने ही वाले हैं, लगता कि ऐसा है।।
रत्नों के बिम्ब से प्रकाश, नित्य झरे हैं।
रविचंद्र हों करोड़ों तो भी, फीके पड़े हैं।।8।।
वैराग्य मयी रूप देख, भाव बने हैं।
सम्यक्त्व भक्ति करके पायें, पाप हने हैं।।
हम भी करेंगे दर्श सदा, भाव बनाते।
होगी हमारी चाह पूरी, भाव ये भाते।।9।।
भक्ति की भावना के साथ, हम भी आयेंगे।
दर्शन करेंगे देव का, मुक्ति को पायेंगे।।
रत्नों मयी परकाश है वो, सारा चमकता।
सूरज है चांद तारे, शौर्य सारा दमकता।।10।।

दोहा

देव पूजने जाते हैं, लेकर द्रव्य अपार।
यहीं से पूजा हम करें, करना प्रभु स्वीकार।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तर-दिशुद्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

जो भक्त इस शुभ पाठ को, बड़ी भक्ति से करते रहे।
आतम समाधि सुख निधि, भंडार वे भरते रहे।।
मंगल सदा होवे जगत में, बस यही है भावना।
मन शांत हो तन शांत हो, मिट जाए जग की कामना।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

नन्दीश्वर द्वीपस्थ पूर्व दिशा में स्थित त्रयोदश

जिनालय पूजा

गीता छंद-स्थापना (तर्ज : प्रभु पतित पावन...)

प्रभु दूर बैठे हो यहां से, किन्तु हम पूजा करें।
सूरज किरण से ही कमल को, दूर से विकसित करें।।
तेरह जिनालय पूर्व दिश में, भाव से पूजा करें।
आओ प्रभो हृदय बसो, नर जन्म को सार्थक करें।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छंद (तर्ज : प्रभु पतित पावन...)

सत्य कहता हूँ प्रभो, बस आत्म दर्शन चाहिए।
इसके सिवा ना सुख कहीं, प्रभु चरण वंदन चाहिए।।
हम पूर्व दिश के द्वीप अष्टम, में बसे प्रभु पूजते।
सम्यक्त्व जल ले आये हैं, जन्मादि रोग भी भागते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मन मेरा चंचल प्रभो, संताप ताप ही देता है।
समझाता हूँ इसको मगर, ना मानता दुख देता है।।
हम पूर्व दिश के द्वीप अष्टम, में बसे प्रभु पूजते।
शुभ ज्ञान का चंदन लिया, तन मन के ताप हैं भागते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत अखंडित आत्म अक्षय, का सुना गुणगान है।
संसार तज आतम को पाऊँ, मुझको हुआ यह भान है।।

हम पूर्व दिश के द्वीप अष्टम, में बसे प्रभु पूजते।
यह पापी मन पावन बने, हम अक्षतों को लावते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन ना मरा है काय जागृत, राग में सुख मानता।
है हार इसमें प्यार झूठा, मोह में ना जानता।।
हम पूर्व दिश के द्वीप अष्टम, में बसे प्रभु पूजते।
इस मोह के बंधन तजे, हम पुष्प लेकर आवते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन में रस मिलता बड़ा, मन लालसा का दास है।
इस आत्मा का सुख है सच्चा, होवे इसमें वास है।।
हम पूर्व दिश के द्वीप अष्टम, में बसे प्रभु पूजते।
मैं पाऊँ तृप्ति नाथ तुम सी, ले चरू हम आवते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान का तम है जगत में, रूप अपना ना दिखा।
है श्रेष्ठ केवल ज्ञान जिनवर, आपने अमृत चखा।।
हम पूर्व दिश के द्वीप अष्टम, में बसे प्रभु पूजते।
आतम प्रकाशित हो हमारा, दीप ले हम पूजते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब मन तपेगा तन तपे, यह आत्मा तब ही तपे।
जग में तपस्या के बिना, ना कोई भी प्रभुता जगे।।
हम पूर्व दिश के द्वीप अष्टम, में बसे प्रभु पूजते।
हम सूर्य चंदा सी चमक को, धूप लेकर आवते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वारथ जगत में कार्य करता, पर सुफल ना पाया है।
मुक्तिफल बिन स्वार्थ का, पाने चरण में आया है।।
हम पूर्व दिश के द्वीप अष्टम, में बसे प्रभु पूजते।
रत्नत्रय फल पाने को, फल हम चरण में लावते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मम आत्मा शुभ है सुवासित, करम ने दुर्गंध दी।
जब संग पाया आपका, तब आत्मा मम है जगी।।
हम पूर्व दिश के द्वीप अष्टम, में बसे प्रभु पूजते।
मिथ्यात्व का प्रभु नाश हो, यह अर्घ्य चरणों लावते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

विनती क्यों न सुनते हो, हे मेरे भगवान।
अपने सम मुझको करो, बारंबार प्रणाम।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

चौपाई

नंदीश्वर में बने जिनालय, भव्यों को है सुख के आलय।
पूर्व दिशा गिरी पर्वत अंजन, भक्तों को यह करे निरंजन।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

अंजन के चारों दिश वापी, जाये वहां ना कोई पापी।
एक लाख योजन की खाई, दधिमुख में बैठे जिन राई।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदा वापिका मध्य दधिमुख पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

नंदा वापी हैं ईशान, रतिकर इसकी हैं शुभ शान।
शाश्वत वहां जिनालय राजे, जिनवर की शोभा अति साजे।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदावापि ईशान कोणे रतिकर पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

नंदा के आग्नेय दिशा में, रतिकर उसमे शोभा पावे।
अक्षय धाम महासुखकारी, गाये महिमा सब नर नारी।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदावापि आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

दक्षिण नंदवती सुखदायी, दधिमुख में जिनवर छवि भायी।
अष्ट द्रव्य से पूजन करते, बारंबार वंदन भी करते।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदवती वापिका मध्य दधिमुख पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

अग्नि कोण में आनंद आवे, रतिकर से रति मन में भावे।
प्रतिमायें मनहर अभिराम, बार बार मैं करूँ प्रणाम।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदवती वापी आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

वापी नंदवती नैऋत्य, दर्शन करवाता है सत्य।
शाश्वत बिम्ब जिनालय शाश्वत, दर्शन से सुख पायें शाश्वत।।

नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदवति वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

नंदोत्तर सुवापी पश्चिम, दधिमुख दर्शन करता निश दिन।
रत्नमयी जिन आभामंडल, जगत प्रकाशित है भूमण्डल।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदोत्तरा वापिका मध्य दधिमुख पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

रतिकर पश्चिम नैऋत्य शोभे, देव देवियों का मन मोहे।
भावो से मैं पूजन कर लूँ भव-भव के संकट को हर लूं।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदोत्तरा वापीका नैऋत्य कोणे रतिकर पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

पश्चिम वायव्य रतिकर भाया, भक्त दर्श करने बुलवाया।
पूजा जिनवर की ही भाये, इसीलिए पूजा को आये।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदोत्तरा वापीका वायव्य कोणे रतिकर पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

उत्तर नंदिघोषा दधि मुख, पूजा कर मिलता मुक्ति सुख।
पावन प्रभु की पूजा कर लूँ, भव-भव की विपदायें हर लूँ।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदाघोषावापिका मध्य दधिमुख पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

वायव्य नंदी घोषा रतिकर, पूजा करते भक्त हैं आकर।
अकृत्रिम जिनवर की पूजा, काम नहीं हैं अब कोई दूजा।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदिघोषावापी वायव्य कोणे रतिकर पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

नंदी घोषा कोण ईशान, अजब निराली जिनवर शान।
लगता प्रतिमा अब बोलेगी, मुक्ति द्वार निश्चित खोलेगी।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाऊँ, भाव वंदना मैं कर आऊँ।
दास तुम्हारा तुम्हें पुकारे, इस जीवन के तुम्हीं सहारे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नंदि घोषावापी ईशान कोणे रतिकर पर्वत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

पूर्णार्घ्य

अडिल्ल छंद

जा नंदीश्वर भक्ति के हैं भाव।
किन्तु ना जा सकते हैं वहां पे पांव।।
देव-देवियां ले अर्घ्यों के थाल।
भक्ति भाव से नित्य गायें जयमाल।।
त्रिभुवन पति हो जग के स्वामी आप।
जब तक श्वांस चले हम करेंगे जाप।।
निज से निज का मिलन करा दो आप।
मिट जाये भव-भव के सब संताप।।
विनय सहित पूजन करते हैं आज।
सुख समृद्धि पावे सकल समाज।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

नंदीश्वर की वंदना, करने आवें देव।
शीघ्र मुझे दर्शन मिले, करूँ, आपकी सेव।।

चौपाई

सम्यग्दर्शन प्रथम है सीढ़ी, मुक्ति मार्ग बतलाता पीढ़ी।
सत्य-सत्य दिखता है जिसको, भेद ज्ञान होता है उसको।।
जड़ चेतन को अलग ही जाने, चेतन का श्रद्धान बखाने।
अष्ट अंग धारी है दर्शन, पापों का करता है घर्षण।।
बाह्य सुखों में रस ना आता, बस आतम का ध्यान सुहाता।
पारस मणि सम्यग्दर्शन है, लोहे को करती कंचन है।।
अक्षय स्रोत सुखों का खोले, मिथ्यातम में कभी ना डोले।
सम्यग्दर्शन है हितकारी, आतम बाग की है यह क्यारी।।
श्रावक संज्ञा इससे पाता, बाकी सभी व्यर्थ में जाता।
दृढ़ अपना श्रद्धान बनाओ, लालच में कही डिग ना जाओ।।
सुख-दुख कर्मों का फल मानो, पाप पुण्य का लेखा जानो।
और कहीं फिर ना अटकोगे, फिर संसार में ना भटकोगे।।
दर्शन के संग ज्ञान हो सच्चा, आठ वर्ष को हो वह बच्चा।
वह सम्यग्ज्ञानी बन जाता, वह दृढ़ श्रद्धानी बन जाता।।
हेय ज्ञेय उपादेय को जाने, यह विवेक से बोल बखाने।
अणुव्रत भाव से धारण करना, बारह व्रत का पालन करना।।
प्रतिमा लेकर आगे बढ़ना, मुक्ति की सीढ़ी को चढ़ना।
सच्चे श्रावक यदि बन जाओ, सोलहवें स्वर्गों को पा जाओ।।
फिर आकर के करों तपस्या, छूट जायेगी सभी समस्या।
बस मुक्ति का आनंद पाओ, ना जग में आकर भरमाओं।।
लूला-लंगड़ा, अंधा दीन, नर्क तिर्यंच ना जावे जीव।
स्त्री में ना पैदा होता, सम्यग्दृष्टि सब सुख पाता।।
नंदीश्वर जिनवर की प्रतिमा, भाव सहित जाकर के लखना।
दर्श ही सम्यग्दर्शन देवे, विपदायें सारी हर लेवें।।

सम्यग्दर्शन जब आयेगा, वह तो सुख ही सुख पायेगा।
'स्वस्ति' चरण में वंदन करती, भाव को आपके दर पर धरती।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

जो भक्त इस शुभ पाठ को, बड़ी भक्ति से करते रहें।
आतम समाधी सुख निधि, भंडार वे भरते रहें।।
मंगल सदा होवे जगत में, बस यही है भावना।
मन शांत हो तन शांत हो, मिट जाये जग की कामना।।
इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीपस्थ दक्षिण दिशा में स्थित त्रयोदश
जिनालय पूजा

शंभु छंद-स्थापना

आनंद देय नंदीश्वर जिन, जो आकर पूजा करते हैं।
मिथ्यातम हर सम्यक् देते, इक दिन मुक्ति को वरते हैं।।
मानुष ना जा सकते पर, हम पूजा यहां से करते हैं।
सुंदर प्रतिमा सुंदर भावों से, कर्म कालिमा हरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

चाल छंद (तर्ज : ऐ मेरे वतन के...)

श्रद्धा का जल ले आऊँ, मिथ्यामल को धो जाऊँ।
सब कर्म कालिमा छूटे, बंधन कर्मों का टूटे।।
प्रभु साथ हमारे रहना, बस मान लो इतना कहना।
सौ बार नमन हम करते, चरणों में माथा धरते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब दर पर तेरे आयें, चंदन सी खुशबू पायें।
शीतल हो जाये देवा, मैं करूँ आपकी सेवा।।
प्रभु साथ हमारे रहना, बस मान लो इतना कहना।
सौ बार नमन हम करते, चरणों में माथा धरते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पाद ध्रौव्य व्यय छूटे, पर्याय से नाता टूटे।
अक्षय पद का मैं राही, मुक्ति हमको है भायी।।
प्रभु साथ हमारे रहना, बस मान लो इतना कहना।
सौ बार नमन हम करते, चरणों में माथा धरते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

खुशबू दुर्गंध मिटाती, पुष्पों से डाल सजाती।
आतम की खुशबू पाऊँ, कुछ और नहीं मैं चाहूँ।।
प्रभु साथ हमारे रहना, बस मान लो इतना कहना।
सौ बार नमन हम करते, चरणों में माथा धरते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता खाने की करते, फिर भी ये पेट ना भरते।
ये भूख मिटा दो देवा, नैवेद्य से करते सेवा।।
प्रभु साथ हमारे रहना, बस मान लो इतना कहना।
सौ बार नमन हम करते, चरणों में माथा धरते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंधियारा हमें सुलाये, भोगों की ओर बुलाये।
आतम उजियारा पाऊँ, फिर ना जग में भरमाऊँ।।
प्रभु साथ हमारे रहना, बस मान लो इतना कहना।
सौ बार नमन हम करते, चरणों में माथा धरते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग है कर्मों का रेला, मोही का बना मेला।
सिद्धांत ज्ञान को पाऊँ, कर्मों की धूप चढ़ाऊँ।।
प्रभु साथ हमारे रहना, बस मान लो इतना कहना।
सौ बार नमन हम करते, चरणों में माथा धरते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से मैं करूँ निमंत्रण, फल से है जिन आमंत्रण।
मुक्ति फल देने आओ, मुझको जग से ले जाओ।।
प्रभु साथ हमारे रहना, बस मान लो इतना कहना।
सौ बार नमन हम करते, चरणों में माथा धरते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव तारक आप कहाते, मुक्ति से आप मिलाते।
आतम का ज्ञान सिखा दो, कर्मों से मुक्त करा दो।।
प्रभु साथ हमारे रहना, बस मान लो इतना कहना।
सौ बार नमन हम करते, चरणों में माथा धरते।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

दक्षिण दिश पूजा करो, भव्य जहां जिन मंदिर।
परिवार सहित भक्ति करें, आवें नित्य पुरंदर।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

अंजन गिरि दक्षिण दिशा, बने जिनालय सार।
इन्द्र नील मणि सम छवि, नमस्कार शत बार।।

कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

मध्य वापिका कमल है, अरजा उसका नाम।
दधि मुख पर्वत पर बसे, हैं मेरे भगवान।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिकामध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

अरजा द्रह ईशान में, रतिकर गिरि सम्राट।
रत्नमयी जिन बिम्ब है, वे ही हैं सम्राट।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिका ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

अग्नि कोण रतिकर जहां, अरजा वापी धाम।
मिले सुफल जिन दर्श से, पावे पूर्ण विराम।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिका आग्नेयकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

कंचन जैसा जल भरा, विरजा नाम कहाय।
दधिमुख अविचल धाम है, शत-शत शीश झुकाये।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिकामध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

रतिकर अद्‌भुत मणि समा, विरजा कमल खिलाय।
अकृत्रिम जिन भवन है, शत-शत शीश झुकाये।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिका आग्नेयकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

पीत वर्ण रति कर हुआ, विरजा सिन्धु समान।
जिनागार जिन को नमूँ, करते आतम ध्यान।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिका नैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

नाम अशोका वापी का, करे शोक से दूर।
दधिमुख पर मंदिर बने, सुख देवे भरपूर।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिकामध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

वापी अशोका द्रह बनी, प्रकृति शोभ अपार।
रत्नों की निधियां पड़ी, रतिकर नित्य बहार।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अशोकवापिकानैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

चिंतन में दर्शन करें, रत्नमयी हैं देव।
रतिकर में जिन राजते, देव करें है सेव।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे अशोकवापिका वायव्यकोणे रतिकरपर्वतजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

रोग शोक नश जात है, वीता शोका नाम।
दधिमुख दर्शन जावते, बारंबार प्रणाम।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकामध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

सबके मन को मोहता, पर्वत है अभिराम।
करूं वंदना भाव से, सौ सौ बार प्रणाम।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वीतशोकावापिका वायव्यकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

भक्तों को सुख देत है, रतिकर शिखर महान।
रक्त वर्ण का ये कहा, गाते हैं यश गान।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावें भवपार।
सर्व दुखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वीतशोकवापिकामध्य ईशानकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

पूर्णार्घ्य

दोहा

नंदीश्वर दक्षिण दिशा, तेरह चैत्य महान।
वसू द्रव्य लेकर प्रभु, करते नित्य प्रणाम।।
कृपा दृष्टि प्रभु आपकी, हो जावे भव पार।
सर्व दुःखों से छूटकर, पहुंचे मुक्ति द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

वस्तु संचय पाप है, किया आपने त्याग।
जड़ तज चेतन को भजा, खिला आत्म का बाग।।

वीर छंद

संचय किया परिग्रह मैंने, हे जिनवर पाया संताप।
जड़ वस्तु से प्रीति कीनी, मिला है मुझको भव आताप।।
आती हुई चंचला लक्ष्मी, क्षण भर सुख को देती है।
रक्षा करता नाश ना होवे, यह चिंता फिर रहती है।।
दुखदाई है प्रीति इसकी, बात मैं ये जाना करता।
फिर भी भौतिक सुख के पीछे, निशदिन मैं भागा करता।।
जड़ को मैंने मन के उच्चासन, पर नाथ बिठ़ाया है।
इच्छाओं का अंत नहीं मन, बात समझ ना पाया है।।
सभी पाप की जड़ यह जड़ है, पाप पाप बुलवाता है।
पापी मन चैन ना पाता है, नर्कों के दुःख उठाता है।।
फूलदान में सजे फूल, सुंदर हैं, किन्तु जड़ें नहीं।
भौतिक सुख ऐसा ही जग में, पाप बढ़े पर पुण्य नही।।
सुख साधन में आकर्षण है, नहीं नियंत्रण होता है।
आत्म ध्यान ना होता इससे, पाप निमंत्रण होता है।।
जब तक है साथ परिग्रह का, तब तक मन में है शांति नही।
त्याग भाव आयेगा जिस क्षण, आत्म प्रीति हो जाये वहीं।।
क्रोध मान माया करता है, जड़ एकत्रित करने में।
लोभ सदा भी करता मानव, पाप परिग्रह करने में।।
इच्छा के संग है तनाव भय, चिन्ता की काली छाया।
फिर न तजता है पाप परिग्रह, धर्म जरा ना मन आया।।
भौतिक साधन नहीं साधना, आतम की करने देते।
शान्ति स्वरूप अभय निश्छल सुख, नहि आत्म आने देते।।

यदि अपने आतम को देखें, मन प्रसन्न हो जायेगा।
वैभवशाली शक्तिशाली, मुक्ति पथ ले जायेगा।।
नही आत्म से बड़ा कोई भी, शांति को देने वाला।
'स्वस्ति' प्रेम से पिओ धर्म का, निशदिन स्वादु सुख प्याला।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

जो भक्त इस शुभ पाठ को, बड़ी भक्ति से करते रहे।
आतम समाधी सुख निधि, भंडार वे भरते रहे।।
मंगल सदा होवे जगत में, बस यही है भावना।
मन शांत हो तन शांत हो, मिट जाये जग की कामना।।

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीपस्थ पश्चिम दिशा में स्थित त्रयोदश जिनालय पूजा

'तर्ज- चौबीसी पूजा' स्थापना

प्रकृति का सुन्दर रूप, छटा निराली है।
वापी वन संगम साथ, बहु खुशहाली है।।
प्रतिमायें मनहर धाम, दर्शन देव करें।
शुभ भाव हमारे हों, पूजा आज करें।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज- चौबीसी पूजा

जन्मों की करूण व्यथा, नाथ सुनाते हैं।
कर्मों का मल हम धोये, नीर चढ़ाते हैं।।

हमको करो प्रभु निहाल, पूजा करते हैं।
दो आत्म धर्म का माल, नमन भी करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता है चिता समान, नित्य जलाती है।
पूजूँ चंदन से नाथ, ताप मिटाती है।।
हमको करो प्रभु निहाल, पूजा करते हैं।
दो आत्म धर्म का माल, नमन भी करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम की वाणी नाथ, ज्ञान कराती है।
अक्षय आतम का राज यही बताती है।।
हमको करो प्रभु निहाल, पूजा करते हैं।
दो आत्म धर्म का माल, नमन भी करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व पुष्प की गंध, आनंद देती है।
दुर्गंध काम की दूर, यह ही करती है।।
हमको करो प्रभु निहाल, पूजा करते हैं।
दो आत्म धर्म का माल, नमन भी करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पेट मांगता रोज, भोजन देते हैं।
आतम अृमत का पान, कभी न करते हैं।।
हमको करो प्रभु निहाल, पूजा करते हैं।
दो आत्म धर्म का माल, नमन भी करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंधियारा कर्म करे, दीपक ले आया।
आतम उजियारा होय, पाने को आया।।
हमकों करो प्रभु निहाल, पूजा करते हैं।
दो आत्म धर्म का माल, नमन भी करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब काल आयेगा पास, ठाठ पड़ा रहता।
कर्मों की धूप चढ़ाये, अग्नि में खेता।।
हमको करो प्रभु निहाल, पूजा करते हैं।
दो आत्म धर्म का माल, नमन भी करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल के लालच में नाथ, जग घूमा करते।
दो आत्म धर्म का माल, नमन हम हैं करते है।।
हमको करो प्रभु निहाल, पूजा करते हैं।
दो आत्म धर्म का माल, नमन भी करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वाणी करके शुद्ध, अर्घ को ले आये।
कुछ और नहीं है पास, भावों को भाये।।
हमको करो प्रभु निहाल, पूजा करते हैं।
दो आत्म धर्म का माल, नमन भी करते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आतम में सुख है भरा, खोजो धर्म अपार।
सुखी जगत हो जायेगा, आये धर्म बहार।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

भुजंग प्रयात छंद-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...

सुअंजन में बैठे, निरंजन के धारी।
स्वयं सिद्ध जिनवर, निजातम बिहारी।।
तुम्हें हाथ जोड़ूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

विजय वापी दधि मुख में, जिनवर विराजे।
अकृत्रिम जिनालय दरश, पाप भाजे।।
तुम्हें हाथ जोड़ूं, और शीश झुकाऊँ।
तजूं पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे विजयावापीमध्यदधिमुखपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

विजय वापी रतिकर, रमणीय लगती।
प्रभु पूजा करने से, आतम भी जगती।।
तुम्हें हाथ जोड़ूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे विजयावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

विजय वापी जायें, विजय को ही पाये।
बना श्रेष्ठ मंदिर, जो मन को हराये।।
तुम्हें हाथ जोड़ूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

अंजन के दक्षिण में, वैजयन्ती वापी।
करें दर्श भव्य ही, जाते न पापी।।

तुम्हें हाथ जोडूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूं पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वैजयंतीवापिका मध्यदधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

प्रभु दर्श मैं तेरा, पाने को आया।
प्रभु भाव भक्ति, बढ़ाने को आया।।
तुम्हें हाथ जोडूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वैजयंतीवापीआग्नेयकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

वैजयन्ती का वापी, अति शोभा पावे।
जो दर्शन को जावे, वो पुण्य बढ़ावे।।
तुम्हें हाथ जोडूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वैजयंतीवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

वापी में विकसित कमल, की है पंक्ति।
रहते हैं जिनवर, मनी है जयन्ति।।
तुम्हें हाथ जोडूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे जयंतीवापीका मध्यदधिमुखपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

अकृत्रिम जिनालय, सदा ही रहेंगे।
करें भाव पूजा, करम को दहेंगे।।
तुम्हें हाथ जोडूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे जयंतीवापीनैऋत्यकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

सभी देव देवी भी, पूजा को जाऐं।
मिटें ताप कर्मों का, पुण्य बढ़ाये।।
तुम्हें हाथ जोड़ूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे जयंतीवापीवायव्यकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

अपराजित ने ही, पराजित किया है।
प्रभु के ही शासन से शासित हुआ है।।
तुम्हें हाथ जोड़ूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे अपराजितवापीमध्य दधिमुखपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

मनोहर मनोहर बने है, ये मन्दिर।
विराजे हैं प्रभु, जिसमें ज्ञान समन्दर।।
तुम्हें हाथ जोड़ूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे अपराजितवापीईशानकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

प्रभु लगते ऐसे, अभी बोल देंगे।
मुक्ति का द्वारा, अभी खोल देंगे।।
तुम्हें हाथ जोड़ूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे अपराजितावापीईशानकोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

पूर्णार्घ्य

उज्ज्वल है दधि मुख, और अंजन है काला।
रतिकर में राजे हैं, जिनवर विशाला।।

तुम्हें हाथ जोडूँ, और शीश झुकाऊँ।
तजूँ पाप माया को, तन से हटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

चलो चलें दर्शन करें, नन्दीश्वर जिनधाम।
अतिशयकारी देव को, बारंबार प्रणाम।।

शंभु छंद

निश्छल पवित्र अनुराग लिये, हम पूजा करने आये हैं।
सौभाग्य सुयश संग जिनवर का, हम कर्म काटने आये हैं।।
शीतल है जिनवर की छाया, हम कर्म ताप से संतापित।
भावों का सुमन भी ले आये, तन मन यह जीवन भी अर्पित।।
नंदीश्वर अष्टम दीप कहा, बावन जिन मंदिर राज रहे।
वे हैं अनादि से इस जग में, देवों के बाजे बाज रहे।।
तेरह-तेरह चारों दिशि में, कुछ नीर सरोवर बने हुये।
जब पर्व अठाई आता है, तब सुरगण प्रभु के चरण छुये।।
है ढोल समा अंजन गिरिवर, और चारों ओर सरोवर हैं।
कंचन जल जिसमे भरा हुआ, लगता वह मनहर-मनहर हैं।।
फिर चारों दिशि में जंगल हैं, जंगल में मंगल देव करें।
फल फूल भार से झुके हुये, वे आस सभी की पूर्ण करें।।
नंदीश्वर की महिमा सुरगण, आकर के देव बताते हैं।
नंदीश्वर में जाकर भक्ति से, पूजा पाठ रचाते हैं।।
इक-इक मंदिर में प्रतिमाएं, इक शत अठ मूल विराजी हैं।
रत्नों की प्रतिमाएं होती, भव्यों के मन को भाती हैं।।
हैं श्याम श्वेत रंग की धारी, हैं ओंठ लाल और कृष्ण केश।
है पंच शतक ऊँची प्रतिमा, छवि मनहर-मनहर है विशेष।।

मुस्कान लिये प्रतिमा का मुख, दुख दूर सभी के करता है।
मन कालुष हर मन विमल-विमल, मन निर्मल-निर्मल करता है।।
यदि सूर्य करोड़ों उदय होय, तो भी प्रतिमा है तेज वान।
यदि चांद करोड़ों निकल जाए, तो भी शीतल है शीलवान।।
लगता तीर्थंकर बैठे हैं, उपदेश अभी हमको देंगे।
जिनवाणी का हमें ज्ञान करा, सब दोष बुराई हर लेंगे।।
दर्शन से सम्यक् दर्श मिले, जो भी दर्शन को जाता है।
श्रद्धा के सुमन ले चरणों में, मुक्ति के भाव बनाता है।।
इच्छा करते हैं हे भगवन्, हम भी नंदीश्वर आयेंगे।
जब पुण्य उदय आए भगवन्, तब ही तो दर्शन पाऐंगे।।
तेरे चरणों की धूली को, आकर के माथ चढ़ायेंगे।
पूजा करके भक्ति करके, हम अपना शीश झुकाऐंगे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद (तर्ज : प्रभु पतित पावन...)

जो भक्त इस शुभ पाठ को, बड़ी भक्ति से करते रहे।
आतम समाधी सुख निधि, भंडार वे भरते रहे।।
मंगल सदा होवे जगत में, बस यही है भावना।
मन शांत हो तन शांत हो, मिट जाये जग की कामना।।

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीपस्थ उत्तरदिशा में स्थित त्रयोदश

जिनालय पूजा

त्रिभंगी छंद-स्थापना

प्रभुदर्श को पायें, प्यास बुझायें, नैनों को आराम मिले।
हो मन में शान्ति, मिटेगी भ्रांति, आतम को आराम मिले।।
मिथ्यात्व हटाऊँ, सम्यक् पाऊँ, ज्ञान उजाला फैलेगा।
धरूँ ध्यान हृदय में, करूँ विनय मैं, कर्म हमारे हर लेगा।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि् त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

त्रिभंगी छंद

जन्मों का प्यासा, प्यास बुझाता, प्यास शांत न हो पाई।
जल लेकर आया, चरण चढ़ाया, तेरी छवि मुझको भाई।।
प्रभु हमें संभालो, कर्म निकालो, डोर सौंप दी हाथों में।
आतम मूरत हो, शुभ सूरत हो, जीवन खोना बातों में।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति के साधक, आत्म आराधक, पापों का अवसान किया।
पायी शीतलता, आत्म विमलता, मुक्ति में विश्राम किया।।
प्रभु हमें संभालो, कर्म निकालो, डोर सौंप दी हाथों में।
आतम मूरत हो, शुभ सूरत हो, जीवन खो ना बातों में।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं ध्यान बढ़ाऊँ, महिमा गाऊँ, उज्ज्वल अक्षत ले आया।
तुमको नित देखूँ, निज में लेखूँ, तुमसा दर्पण अब पाया।।
प्रभु हमें संभालो, कर्म निकालो, डोर सौंप दी हाथों में।
आतम मूरत हो, शुभ सूरत हो, जीवन खोना बातों में।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कोयल की बोली, भंवरो की टोली, काम बाग में आते हैं।
हम पुष्प चढ़ाते, काम नशाते, पूजा कर हर्षाते हैं।।
प्रभु हमें संभालो, कर्म निकालो, डोर सौंप दी हाथों में।
आतम मूरत हो, शुभ सूरत हो, जीवन खोना बातों में।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवास न करते, व्रत से डरते, बस भोजन दिन रात किया।
न करी तपस्या, रही समस्या, ले नैवेद्य से पूज लिया।।
प्रभु हमें संभालो, कर्म निकालो, डोर सौंप दी हाथों में।
आतम मूरत हो, शुभ सूरत हो, जीवन खोना बातों में।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापों की आंधी, कर्म की बांधी, जग अंधियारा करती है।
प्रभु हो वरदानी, ज्ञान के दानी, आत्म ज्योति प्रगटाती है।।
प्रभु हमें संभालो, कर्म निकालो, डोर सौंप दी हाथों में।
आतम मूरत हो, शुभ सूरत हो, जीवन खोना बातों में।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन है दुश्मन, पापी है मन, कर्म भगाने आया हूँ।
मन में है कल-कल, तन है बेकल, कर्म हटाने आया हूँ।।
प्रभु हमें संभालो, कर्म निकालो, डोर सौंप दी हाथों में।
आतम मूरत हो, शुभ सूरत हो, जीवन खोना बातों में।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

संतोष न आया, जग भरमाया, समता फल की चाहत है।
मैं फल ले आया, चरण चढ़ाया, मुक्ति फल बतलावत है।।
प्रभु हमें संभालो, कर्म निकालो, डोर सौंप दी हाथों में।
आतम मूरत हो, शुभ सूरत हो, जीवन खोना बातों में।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मिले किनारा, चरण सहारा, अर्घ्य साथ में ले आया।
प्रभु तुम्हें पुकारा, करो इशारा, सच्चा मारग अब पाया।।
प्रभु हमें संभालो, कर्म निकालो, डोर सौंप दी हाथों में।
आतम मूरत हो, शुभ सूरत हो, जीवन खोना बातों में।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधी उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ज्ञान उजाला दो हमें, सुख का दो विस्तार।
पुष्पांजलि से पूजते, धर्म की आये बहार।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

उत्तर दिश अंजन गिरि, नीला है आकाश।
पुण्य शाली ही जाएंगे, यहां प्रभु का वास।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

अंजनगिरि पूरब दिशा, 'रम्या वापी' धाम।
दधिमुख में भगवन बसे, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

अंजन के दक्षिण दिशा, 'रमणीया' स्थान।
दधिमुख जिन हैं वासते, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

अंजन के पश्चिम दिशा, वापी 'सुप्रभा' जान।
दधिमुख जा पूजा करूँ, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

अंजन के उत्तर दिशा, 'सर्वतोभद्र' है वापि।
जिनवर की पूजा करें, लूं ना जन्म कदापि।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरि दक्षिणदिक् रमणीया वापीकामध्य पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

स्वर्णिम रतिकर शोभता, 'रम्या द्रह' ईशान।
जो प्रभु की पूजा करें, हम तुम एक समान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रमणीया वापीका आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

निर्मल जल से भरी हुई, 'रम्याद्रह' स्थान।
रतिकर के मंदिर जजूँ, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रमणीय वापीका नैऋत्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

'रतिकर' से रति जोड़कर, करें प्रभु का ध्यान।
अविचल मंदिर को जजूँ, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरि सुप्रभावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

'रमणीया' नैऋत दिशा, सुख वैभव की खान।
शाश्वत जिन मंदिर जजूँ, बारंबार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापिका नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

प्रभा सु प्रभा फैलती, रतिकर वन के बीच।
जिन मंदिर को पूजते, मिटे कर्म की कीच।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापिका वायव्य कोणे रतिकरपर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

शुभ वायु निशदिन बहे, बहे ज्ञान की धार।
रतिगृह के जिनगृह नमूँ, नमन करूँ शत बार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरि उत्तरदिक् सर्वतोभद्रावापिका मध्यदधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

चेतन रूप निहार कर, चेतनता आ जाये।
रतिगृह के जिनगृह नमूँ, शत-शत शीश झुकाये।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

शान बढ़ी ईशान की, जिन गृह बने विशाल।
अटल अचल मंदिर नमूँ, छूटे जग जंजाल।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

पूर्णार्घ्य

त्रिभंगी छंद

प्रभु छाया पाऊँ, चरण में आऊँ, पूजा के शुभ भाव हुये।
निज शांति पाई, शक्ति आई, आकर हमने चरण छुये।।
भर दो यह गागर, आप हो सागर, भक्त भाव ले आया है।
नंदीश्वर दर्शन, कर्म का भंजन, करने भाव बनाया है।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

दर्शन मैं कैसे करूँ, नंदीश्वर है दूर।
सपनों में आओ प्रभो, सुख पावें भरपूर।।

चौपाई

नंदीश्वर में ईश्वर रहते, देव वहां जा पूजा करते।
भाव शुद्ध चेतन की शुद्धि, ऋद्धि-सिद्धि की होवे वृद्धि।।
पर्व अढ़ाई जब भी आवे, झूम-झूम से भक्ति गावे।
संग परिवार देव आते हैं, नाच झूमकर हर्षाते हैं।।
रत्नमयी द्रव्यों को लाएं, प्रभु चरणों में उसे चढ़ायें।
रत्नों मय दीपक की ज्योति, सारा अंधकार हर लेती।।
दीप चढ़ाएं, धूप चढ़ाएं, स्वर्ण पुष्प से पूज रचाएं।
सबसे श्रेष्ठ हमारे जिनवर, जग में ज्येष्ठ हमारे जिनवर।।
लेते कुछ ना देते रहते, कभी नहीं वो कुछ भी कहते।
नयन झुकाये बैठे जिनवर, हाथ पे हाथ धरे हैं जिनवर।।
बोले ना पर शिक्षा देते, आत्मधर्म की दीक्षा देते।

जन्म मरण की उलझी लड़ियां, दुख-ही-दुख की आई घड़िया।।
पर जो प्रभु चरणों में आए, मुक्ति का रस्ता पा जाये।
गतियों के चक्कर मिट जायें, कर्मों के संकट हट जायें।।
हो भगवान हमारे जिनवर, हो कल्याण हमारा जिनवर।
तुम हो मुक्ति के रत्नाकर, हर्ष हुआ है तुमको पाकर।।
वीतरागी है रूप सुहाना, शुद्ध ज्ञान का दीप जलाना।
हो अरिहंत देव उपकारी, विनती सुन लो आज हमारी।।
नंदीश्वर जा दर्शन पाये, सम्यक् दर्शन को पा जाएं।
दर्शन की मन में अभिलाषा, 'स्वस्ति' की हो पूरी आशा।।
और नहीं मैं कुछ भी चाहूँ, चरण शरण में आ बस जाऊँ।
मन वच काया से मैं ध्याऊँ, चरणों में नित शीश झुकाऊँ।।

दोहा

ज्ञान जरा मुझको नहीं, नहीं आत्म का ज्ञान।
ज्ञान की वर्षा नित् करो, मिट जाये अज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

जो भक्त इस शुभ पाठ को, बड़ी भक्ति से करते रहे।
आतम समाधी सुख निधि, भंडार वे भरते रहे।।
मंगल सदा होवे जगत में, बस यही है भावना।
मन शांत हो तन शांत हो, मिट जाये जग की कामना।।

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

समुच्चय जयमाला

दोहा

भक्ति से मन साफ कर, आया हूँ मैं नाथ।
अब जयमाला गाऊँगा, झुका चरण में माथ।।

चौपाई

प्रभु चरणों में नमस्कार है, मेरा वंदन बार-बार है।
हाथ जोड़ हम शीश नवाते, सर्व दुखों को आपहि हरते।।
आप धरा पर नाव हे जिनवर, सबको पार लगाते प्रभुवर।
मैं भी आशा लेकर आया, पार होऊँ यह भाव को भाया।।
महापुण्य नर दर्शन पाये, नंदीश्वर तीरथ कर आये।
तीरथ दर्शन कर्म को नाशा, भाग्य जगा भक्ति में बासा।।
भाव रूप में पूजा कीनी, अंतर तम की शांति लीनी।
पूजा हो स्वीकार हमारी, तरने की अब मेरी बारी।।
प्रभु भक्ति ही सौख्य दिलाये, प्रभु की पूजा इंद्र बनाये।
क्रम से कर्म नाश हो जाये, फिर मुक्ति का सुख पाजाये।।
प्रभु चरण में तीरथ बसते, तीर्थ भक्ति से पार उतरते।
बिना याचना फल मिल जाये, जो भी तेरी शरण में आये।।
भक्ति धर्म ध्वजा लहराये, नंदीश्वर में जा फहराये।
भक्ति से संयम आ जाये, आतम का आदर हो जाये।।
पंच मेरु गजदंत जिनालय, इष्वाकार भक्ति के आलय।
अकृत्रिम मंदिर के दर्शन, दर्शन में होता आकर्षण।।
मानव कृत मंदिर को वंदन, आतम का होता अभिनंदन।
हम भी नंदीश्वर जायेंगे, चरणों अर्घ्य चढ़ा आयेंगे।।

दोहा

चंदा सूरज नित प्रति, करते भाव प्रणाम।
जिनवर भक्ति नित करें, सुबह हो या शाम।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशु द्वि पंचाशजिना लयस्थ जिनप्रतिमाभ्यां जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य (त्रिभंगी छंद)

कर्मों की माया, जाल बिछाया, उसी जाल में फँसे हुये,
पा तेरी छाया, मैं हर्षाया, आके तेरे चरण छुये।।
नंदीश्वर महिमा, गाई गरिमा, आया है आनंद घना।
आ शीश झुकाऊँ, अर्ध्य चढ़ाऊँ, भाव ज्योति का कलश बना।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिक्षु द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो समुच्चय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ायें)

बड़ा ही महत्व है

गाड़ियों में जीप का, मोती के लिये सीप का
द्वीपों में नंदीश्वर द्वीप का बड़ा ही महत्व है।

नदी में नाव का, शरीर में पांव का
नंदीश्वर द्वीप की प्रतिमाओं का बड़ा ही महत्व है।

भोजन में बड़ी का, बूढ़ों में छड़ी का
नंदीश्वर में बावडी का बड़ा ही महत्व है।

जंगल में झाड़ का, चावल के मांड का
नंदीवर में अंजन पहाड़ का बड़ा ही महत्व है।

खेत में धान का, पत्थर की खान का,
नंदीश्वर विधान का बड़ा ही महत्व है।

बैंको में रिजर्व का, अंग्रेजी में वर्ब का
पर्वों में अष्टान्हिका पर्व का बड़ा ही महत्व है।

श्री नन्दीश्वर भक्ति

हिन्दी पद्यानुवाद परम विदुषि, लेखिका आ. स्वस्ति भूषण

दोहा

दर्शन की मुझे आशा है, नन्दीश्वर है दूर।
यहीं बैठ भक्ति करें, करों कर्म को चूर।।

शम्भू छंद

नन्दीश्वर की प्रतिमाओं का, सुर समूह वंदन करते।
अविनाशी अकृत्रिम मंदिर, कर्म रूपी रज को हरते।।
मन वच काया की शुद्धि से, नमस्कार हम करते हैं।
है मनोज्ञ जिन प्रतिमायें वे, सुख के झरने झरते है।।
।। 1-2।।

अधोलोक में भवनवासी के, भवन सात कोटि मंदिर।
व्यंतर देव के भवनो में भी, है असंख्य प्रभु जिन मंदिर।।
भवन वासी सुर व्यंतर वासी, स्तुति प्रभु की करते हैं।
उन चैत्यालय की स्तुति कर, नमस्कार हम करते है।।
।। 3-4।।

ज्योतिष देवों के विमान में, सुंदर-सुंदर चैत्यालय।
औ वैमानिक के विमान में, जिन प्रतिमाओं के आलय।।
गिन सकते हैं कह सकते हैं, इतने स्वर्ग में मंदिर है।
दर्शन से सुर पाप को धोते, पाते सौख्य संमदर है।।
।। 5-6।।

चतु शतक अट्ठावन मंदिर, मनुज लोक में बतलाये।
अकृत्रिम ये बने चैत्यालय, मनुज लोक को चमकाये।।
तीन लोक अकृत्रिम मंदिर, अद्भुत-अद्भुत सुंदर हैं।
देवो द्वारा पूजित हैं ये, ध्यान के सत्य समंदर।।
।। 7-8।।

वक्षार रूचक कुण्डल विजयार्ध में, मनुजोत्तर के गिरि पर है।
इष्वाकार कुलाचल के संग, उत्तर देव कुरू पर है।।
एक दिशा में तेरह पर्वत, चार दिशा में बावन है।।
दधि मुख रतिकर सुन्दर नाम है, नंदीश्वर में सावन है।।
।। 9-10।।

कार्तिक फाल्गुन षाढ़ माह की, पक्ष सुदी की आठें से।
प्रमुख इन्द्र सुर संघ को लेकर, भक्ति करें गंधाक्षत से।।
सौधर्म इन्द्र अभिषेक है करता, बाकी प्रभु को निहार रहे।
देवी मंगल पात्र को धरती, अप्सरायें तो नृत्य करें।।
।। 11-12।।

कर अभिषेक सुगन्धित चूरा, परिक्रमा भी करते है।
पंचमेरु में भद्रशाल और नन्दन सोम की करते है।।
शुभकार्यों का फल भी शुभ है, पुण्य को संचय करते है।
आठ दिनों तक पूजा करके, वापिस गमन वे करते है।।
।। 13-14।।

।। नंदीश्वर के चैत्यालयो की विभूति।।

गंध कुटी सिंहासन सुन्दर, तोरण वेदी में शोभ रहा।
मानस्तंभ औ चैत्य वृक्ष संग, उपवन सबको मोह रहा ।।
दस-दस पंक्ति ध्वज की फहरें, तीन परिधि का मंडप है।
खेल स्थल अभिषेक स्थल औ, नाटक गीत का मंडप है ।।
कमल युक्त हैं वहां सरोवर, इक सौ अठ शुभ मंगल है।
गंध कुटी में शोभित हैं वे, इक सौ अठ जिन प्रतिमा है।।
।। 15-16-17।।

पांच शतक धनु ऊँची प्रतिमा, समचतुरस्त्र संस्थान वाली।
कोटि सूर्य से प्रभा है ज्यादा, मणि स्वर्ण चांदी वाली।।
तेजस्वी औ बने यशस्वी, जो प्रतिमा को नमन करें।
मैं भी वंदन नमन हूँ करता, अंतर तम के पाप हरे।।
।। 18-19।।

भूतानागत वर्तमान के, एक सौ सत्तर क्षेत्रों में।
जो भी तीर्थंकर विद्यमान हो, दर्श से शान्ति नेत्रों में।।
प्रथम तीर्थंकर वृषभनाथ जी, असि मसि का उपदेश दिया।
सब कर्मों से मुक्त ही होकर, अष्टापद से मोक्ष लिया।।
।। 20-21।।

वसुपूज्य जी वासुपूज्य जी, आपत्ति का अंत किया।
चम्पापुर से मोक्ष पधारे, पावे मुक्ति कंत जिया।।
नारायण बलदेव से पूजित, नेमिनाथ जिनराज हुये।
सभी कषाय शत्रु को जीता, गिरनारी से मोक्ष गये।।
।। 22-23।।

सिद्धि वृद्धि तप तेज को पाया, गुण के बीच विराजें है।
पावापुर के मध्य सरोवर, वीर मोक्ष में साजे है।।
अतुल कीर्ति को धारण कीना, शेष तीर्थंकर बीसों ने।
गिरि सम्मेद से मोक्ष पधारे, नमन हैं उनके चरणों में।।
।। 24-25।।

पर्वत धरती बिल गुहा वन, सिन्धु वृक्ष की शाखा में।
गणधर मुनिवर मोक्ष पधारे, नमूं सिद्ध जिन माथा मैं।।
जिन प्रतिमा निर्वाण क्षेत्र जा, वंदन जो भी करते है।
भव विच्छेद का कारण है ये, यात्र जो भी करते है।।
।। 26-27।।

पुण्य पाठ को जो श्रद्धा से, त्रि संध्या में पढ़ता है।
गणधर पूजित पद को पावे, आत्म ज्ञान में बढ़ता है।।
नंदीश्वर को यहीं से वंदन, भाव सहित हम करते हैं।
भाव से हम अनुमोदन करते, दुख दारिद्र को हरते हैं।।
।। 28-29।।

शेर चाल

(तर्ज - दे दी हमें आजादी.....)

पसीना और मलमूत्र नहीं, बल अतुल होता।
सौरभ है तनु रक्त श्वेत, प्रिय वचनों से नाता।।

वज्र का शरीर, सहस लक्षणों वाला।
गुणरुप सुंदर हैं कहे, जिन नाम की माला।।
।। 30-31 ।।

कोश चार सौ सुभिक्ष, गगन में गमन।
उपसर्ग कवलाहार वध नही है, नमन ।।
चहुँ दिश में चार मुख, विद्याओं के स्वामी।
छाया नही हिले न पलक, हो केवलज्ञानी।।
चउ घाति कर्म क्षय किये, भगवान बन गये।
उत्तम है देवकृत चौदह अतिशय तुम्हारे, मोक्ष में गये।।
।। 32-33-34 ।।

भाषा है मागधी, समूह मैत्री भाव है।
सब ऋतुओं के फल फूल, प्रभु का प्रभाव है।।
रत्नों की वसुधा, वृक्षों से सुशोभित।
आनंद-ही-आनंद जीव, प्रभु पे मोहित।।
।। 35-36 11

भगवान का विहार जब, आकाश में होता।
धरती पे चले मनुज, ऊपर प्रभु को देखता।।
तब देव भूमि धूलि कांटो से रहित करें।
औ मेघ बन के देव, वृष्टि जल की हैं करें।।
।। 37-38 ।।

सात आगे सात पीछे, पंद्रह पंक्ति है।
पच्चीस है दो सो कमल की, यह तो गिनती है।।
हरी भरी पृथ्वी मानो, ऐसी लगती है।
वैभव प्रभु का देख के, खुश पृथ्वी होती।।
।। 39-40 ।।

चारों दिशा निर्मल हुई, आकाश भी हुआ।
ज्योति विमान व्यंतरो का, आना भी हुआ।।
निर्मल है रत्न की किरण औ, सहस आरे है।
वो धर्मचक्र चले आगे, सूर्य द्वारे है।।
।। 41-42 ।।

धर्म चक्र से सम, अठ मंगल द्रव्य है।
श्रद्धा औ प्रीति धरें देव, होते भव्य है।।
शाखा है नील मणियों की, हरी मणि के पत्ते।
बैठे अशोक वृक्ष नीचे, सघन है पत्ते।।
।। 43-44।।

मंदार कुन्द कुमुद नील, कमल मालती।
मद सहित भौरे हैं झूमे, पुष्प की वृष्टि।।
कटक कटि कुण्डल सूत्र, देव पहने हैं।
सुंदर शरीर वाले देव, चँवर ढोरे है।।
।। 45-46।।

सहस सूर्य लुप्त, भामंडल के तेज से।
है दुंदुभि का नाद, वहां वायु वेग से।।
तुम त्रिलोकी नाथ, तीन छत्र शोभते।
अनुपम है मोतियों का जाल, मन को मोहते।।
।। 47-48।।

कर्ण औ हृदय को हरे, वाणी आपकी।
चारों दिशा में एक योजन, जाके फैलती।।
सिहों सहित सिहांसन है, फटिक मणि का।
अतिशय है जिनके उन्हें नमन, शुद्ध भक्त का।।
।। 49-50।।

दोहा

नंदीश्वर की भक्ति का, करता कायोत्सर्ग।
आलोचन इच्छा करूं, मिले मुझे अपवर्ग।।
(कायोत्सर्ग करें)

आरती

चौपाई

।। अंचलिका।।

नंदीश्वर की चार दिशा में, और वहाँ की चहुँ विदिशा में।
अंजन दधिमुख रतिकर पर्वत, उन पर बावन मंदिर दृढ़वत।।1।।

कल्पवासी और व्यंतर वासी, ज्योतिषी सुर और भवनवामी।
दिव्य अष्ट द्रव्यों को लेकर, पूजा वंदन करते जाकर।। 2।।

कार्तिक फागुन माह आषाढ़ में, सुदी अष्टमी भक्ति राह मे।
पूरन मासी तक करें पूजा, करें अर्चना काम न दूजा।। 3।।

महापर्व महाउत्सव करते, अर्चा वंदन पूजा करते।
दुख का क्षय कर्मों का क्षय हो, सुगति गमन और रत्नत्रय हो।। 4।।

समाधिमरण जिन संपत्ति पाऊँ, नंदीश्वर को शीश झुकाऊँ।
नंदीश्वर के जिन है नंदन, नंदीश्वर जिन आलय वंदन।। 5।।

दोहा

पूज्यपाद आचार्य ने, संस्कृत लिखा है पाठ।
'स्वस्ति' ने अनुवाद कर, लिया भक्ति का स्वाद ।।6।।
अक्षर मात्रा छंद में, गलती यदि हुई।
शुद्ध करो भविमान जन, भक्ति पुण्यमई।।

बड़ा ही महत्व है

भक्त के लिये ईश्वर का
पत्नी के लिए पति परमेश्वर का
द्वीपों में नंदीश्वर का
बड़ा ही महत्व है

होने में महान का
उड़ने में विमान का
नंदीश्वर के भगवान का
बड़ा ही महत्व है

गाने मे लय का
भगवान के अतिशय का
नंदीश्वर के जिनालय का
बड़ा ही महत्व है

हवा के रूख का
आत्मा के सुख का
पर्वतों में दधिमुख का
बड़ा ही महत्व है

सुबह-2 मंजन का
करने में मनोरंजन का
पर्वतों में अंजन का
बड़ा ही महत्व है

चंद्रमा में सुधाकर का
बैंक में लॉकर का
पर्वतों मे रतिकर का
बड़ा ही महत्व है

बूढ़ों में छड़ी का
हाथ में घड़ी का
नंदीश्वर की बावड़ी का
बड़ा ही महत्व है

रहने के लिए भवन का
यज्ञ में हवन का
नंदीश्वर के वन का
बड़ा ही महत्व है

मिठाईयों में गूजा का
सलाईयों में सूजा का
नंदीश्वर की पूजा का
बड़ा ही महत्व है

खेत में धान का
देश में संविधान का
करने में नंदीश्वर विधान का
बड़ा ही महत्व है